RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान...

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 06 हिन्दी (मासिक), सिरोही पृष्ठ 04 शाश्वत यौगिक खेती पर विशेष

04

02 करनाल के किसान ने नशा छोड़ अपनाई...

03 वनस्पति पर भी पड़ता है भावनाओं का प्रभाव

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का एक नया प्रयोग

नए युग के लिए नई खेती: 'शाश्वत यौगिक खेती'

देशभर में 700 किसान बने साक्षी

1996 कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना

700 से अधिक किसान भाई कर रहे खेती

2007 से यौगिक खेती के प्रोजेक्ट पर काम शुरू

16 सूत्रीय एजेंडा गांवों के संपूर्ण विकास के लिए

125 से अधिक महासम्मेलन का आयोजन

142 देशों में ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र

शिव आमंत्रण ➤ माउंट आबू (राज.)

प्राचीन काल से ही कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य और रोगों से गहरा संबंध है। कहते हैं जैसा अन्न, वैसा मन और जैसा मन वैसा तन। सभी मनुष्यों का लक्ष्य यही है कि हम निरोगी रहें, शांत, शीतल, और सात्विक वृत्ति को धारण कर सुखमय और आनंदित जीवन जिएं। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पौष्टिक और सात्विक अन्न का सेवन करना बहुत जरूरी है। इस सृष्टि रंगमंच पर एक समय ऐसा था जब मानव निरोगी तथा दैवी गुणों से संपन था, उस समय भारत को सोने की चिड़िया , स्वर्ग भूमि के नाम से आज भी याद करते है। परंतु कालचक्र घूमते हुए स्वर्णिम सतयुगी दुनिया के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग आया। वर्तमान समय सृष्टि का तमोप्रधान स्वरूप विकट परिस्थितियां लेकर खड़ा है। धरती पर उपलब्ध सभी पदार्थ दूषित, दुःखदायी तथा विषैले हो रहे हैं और इसका मुख्य कारण मानव मन का विषैला होना है। प्रकृति मानव की अनुगामिनी है।

कम खर्च में अच्छी फसल हो रही प्राप्त

प्रकृति को सतोप्रधान बनाने तथा मानव मात्र के तन-मन को सुख शांतिमय, निरोगी एवं तनावमुक्त बनाने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एजूकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा भारत के किसान भाई-बहनों को शाश्वत यौगिक-जैविक खेती के विषय में जागृत किया जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप कम खर्च में अच्छी फसल प्राप्त हो रही है। यह नए युग के लिए नया कदम है।

यह एक अनोखा विज्ञान है और हमारी प्राचीन पद्धति है। शाश्वत यौगिक खेती के लिए हमें कुदरत के नियम एवं प्रभाव पर चलकर प्रगत विज्ञान के आधार से निसर्ग एवं प्रकृति के पांचों तत्वों सहित सर्व जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों से स्नेह का रिश्ता जोड़ना है। इसके लिए आवश्यकता है आध्यात्मिक शक्तियों की, जो हमें राजयोग से मिलती है।

राजयोग के अभ्यास में हम सर्वप्रथम आत्मा के मूल गुणों को पहचानते हैं और उसमें स्थित होते हैं। फिर प्रकृति के पांचों तत्वों को, ग्रहों को, तारों को वा जीव-जंतुओं को परमात्मा की शक्ति के प्रकंपन देकर यौगिक खेती में इनका सहयोग लेते हैं। इससे वनस्पतियां बढ़ती हैं व अच्छा उत्पादन मिलता है।

परमात्मा से जोड़ते हैं संबंध

राजयोग के अभ्यास में हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करके परमात्मा पिता से अपना संबंध स्थापित करते हैं। उनकी शक्तियों से स्वयं को भरपूर करते हैं फिर प्रकृति के तत्वों से मन ही मन बातें करते हैं, उन्हें आदरपूर्वक आह्वान करके, सृष्टि के संतुलन को बनाए रखने के लिए उनका सहयोग मांगते हैं। फिर जमीन को आवश्यकता प्रमाण जैविक खाद देकर धरती मां को शक्तिशाली बनाते हैं।

वर्ष 2018 में प्रभाग की सेवाएं...

राजस्थान किसान सशक्तिकरण अभियान

12 स्थानों से चलाया गया अभियान

137612 किसान लाभान्वित

26 जिले के 1094 गांवों में पहुंचा

3812 ने किया व्यसनों का त्याग

2018: बिहार किसान सशक्तिकरण अभियान

10 स्थानों से चलाया गया अभियान

20 दिन प्रदेशभर में किया भ्रमण

29 जिलों में चलाया गया अभियान

1368 गांवों में पहुंचा अभियान

240861 किसान लाभान्वित

4520 किसानों ने किया व्यसनों का त्याग

योग के माध्यम से वनस्पति को देते हैं स्नेह की किरणें...

फसल बुवाई के बाद बीच-बीच में खेत की परिक्रमा करते हुए वनस्पति को स्नेह की किरणें देकर उसकी पालना करते हैं। समय-समय पर पानी तथा आवश्यकता प्रमाण अमृतपानी वा जीवामृत भी डालते हैं। अगर कारण-अकारण फसल पर किसी भी प्रकार का रोग आ जाता है तो धैर्यवत संकल्पों के साथ योग का प्रयोग कर और आवश्यकता अनुसार जैविक साधनों द्वारा उस फसल को निरोगी बनाते हैं। वर्तमान में भारत में करीब 700 किसान अपनी खेती पर योग के प्रयोग कर रहे हैं और वे कम खर्चे में बहुत अच्छी फसल ले रहे है। जो किसान पहले महंगी-महंगी खादें और दवाइयां डालने पर भी इतने अन्न का उत्पादन नहीं कर पाते थे, वह बहुत कम मेहनत और कम खर्चे में उससे अच्छी फसल ले रहे हैं। उनके सात्विक निव्यर्सनी जीवन का, उनके सकारात्मक चिंतन का और परमात्म शक्तियों का प्रभाव प्रकृति बहुत सहज स्वीकार कर उन्हें पौष्टिक सात्विक अन्न, फल और सब्जियां प्रदान कर रही है।

जैसे संकल्प होंगे, वैसी सृष्टि होगी

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

हमारे संकल्पों का बहुत महत्व है। हमारे जैसे संकल्प होंगे वैसी ही सृष्टि होगी। हमारे एक-एक संकल्पों का प्रभाव प्रकृति और पांचों तत्व पर पड़ता है। विश्व नाटक के प्रारंभिक स्वर्णिम काल में हर मानव सर्वगुण संपन्न, 16 कला सम्पूर्ण दिव्य स्वरूप में था। वहां सम्पूर्ण स्वास्थ्य, समृद्धि, अपार सुख-शांति तथा दिव्य-संस्कृति पर आधारित जीवन-शैली थी। उस समय की सात्विक कृषि से स्वादिष्ट, शुद्ध और पौष्टिक अन्न, फल-फूल, सब्जियां आदि सहज रूप से प्राप्त हो जाती थी। उस समय मानव का मन सात्विक और शुद्ध होता था जिसके प्रकम्पन प्रकृति ग्रहण करती थी। इससे उत्पादित फल एवं सब्जियों में भी उन संकल्पों का प्रभाव पाया जाता था। शाश्वत यौगिक खेती को अपनाकर किसान भाई कम लागत में अधिक उत्पादन कर सकते हैं।

किसानों के आएंगे अच्छे दिन

राधामोहन सिंह
केंद्रीय कृषि मंत्री
भारत सरकार

जैविक-यौगिक खेती से फसलों की उत्पादकता बढ़ेगी। इससे किसानों की आय बढ़ेगी और देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत होगी। वर्ष 2022 तक खेती को फायदे का सौदा बनाने का लक्ष्य है। सकारात्मक सोच का प्रकृति के साथ-साथ पशुधन विकास पर बहुत असर पड़ता है। हालांकि, कुछ लोगों को इस पर यकीन नहीं आता, लेकिन यह वैज्ञानिक सत्य है। सरकार ने यौगिक खेती के विकास को समर्थन देने का प्रस्ताव बनाया है, ताकि किसानों का खेती के पारंपरिक तरीकों की ओर रुझान बढ़े।

यौगिक खेती, सशक्त किसान

बी.के. सरला बहन
अध्यक्षा
कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

प्रभाग द्वारा समग्र भारत में किसान सशक्तिकरण अभियान निकालकर, शाश्वत यौगिक खेती के कार्यक्रमों से किसानों को सशक्त किया जा रहा है। अभी तक सरकार के सहयोग से पूरे उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान में यह अभियान निकाले जा चुके हैं। इस वर्ष झारखंड, मध्य प्रदेश में निकाला तय किया है।

सरकार का समर्थन गौरव की बात

बी.के. राजू भाई
उपाध्यक्ष
कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

दिल्ली पूसा में आयोजित राष्ट्रीय कृषि मेले में शाश्वत यौगिक खेती के स्टाल का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अवलोकन किया। साथ ही कृषि मंत्री, वैज्ञानिक आदि को यौगिक खेती की जानकारी दी गई। इसी का परिणाम रहा कि भारत सरकार ने यौगिक खेती को समर्थन दिया और अनुदान देने का प्रस्ताव बनाया है। ये हमारे संस्थान और प्रभाग के लिए गौरव की बात है। इस वर्ष मध्य प्रदेश और झारखंड के किसानों को शाश्वत यौगिक खेती और नशामुक्ति का संदेश देकर जागरूक किया जाएगा।

ब्रह्माकुमारी संस्थान की पहल लाई रंग: भारत सरकार ने किया यौगिक खेती का समर्थन

'यौगिक खेती' करने पर किसानों को मिलेगा 48 हजार रुपए अनुदान

शिव आमंत्रण » नई दिल्ली

ब्रह्माकुमारीज संस्था के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा पिछले 11 वर्षों से लगातार यौगिक खेती को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसकी आवाज प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंची और अब मोदी सरकार ने शाश्वत यौगिक खेती का समर्थन किया है। इसे बढ़ावा देने के लिए अद्भुत योजना बनाई है। इसके तहत अब सरकार यौगिक खेती करने वाले किसानों को आर्थिक मदद के तौर पर तीन वर्ष में 48 हजार रुपए की अनुदान राशि प्रदान करेगी। सरकार ने इस योजना के तहत वर्ष 2018-19 के लिए 360 करोड़ रुपए बजट का प्रावधान किया है।

जैविक खेती को प्रोत्साहन देने वाली केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना पर परंपरागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) के लिए नई गाइडलाइंस जारी की गई है। इसके तहत ऐसे किसानों को नकद प्रोत्साहन दिया जाएगा जो यौगिक खेती, गौ माता खेती या ऋषि खेती करेंगे। किसानों को अनुदान के रूप में तीन वर्ष में 48,700 रुपए दिए जाएंगे। पहले साल 17 हजार, दूसरे साल 15 हजार और तीसरे साल 16100 रुपए दिए जाएंगे। ये राशि सीधे किसानों के खाते में जमा की जाएगी। इसके तहत फंड राज्य सरकार को दिया जाएगा और राज्य सरकार पॉलिसी गाइडलाइंस को परिभाषित कर सकती है। गौरतलब है दिल्ली के पूसा में आयोजित कृषि विकास मेले में ब्रह्माकुमारीज संस्था के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा यौगिक खेती का विशाल स्टॉल लगाया गया था। इसमें यौगिक खेती से उपजे अनाज को भी दर्शाया गया था। जिसका खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अवलोकन किया। उन्होंने जैविक खेती के साथ यौगिक खेती को बढ़ावा देने के लिए आश्वासन दिया था।

केंद्र सरकार ने 360 करोड़ रुपए का बजट जारी किया

राष्ट्रीय कृषि मेला दिल्ली में लगाए गए स्टाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहुंचकर ली यौगिक खेती की

इनकी खेती पर मिलेगा अनुदान

भारत सरकार की नई गाइड लाइंस के मुताबिक जो किसान खेती के परंपरागत तरीकों जैसे यौगिक खेती, गौ माता खेती, वैदिक खेती, वैष्णव खेती, अहिंसा खेती, परंपरागत खेती, शिव योग कृषि, टिक्का खेती, बायो खेती और ऋषि कृषि को अपनाएंगे उन्हें यह वित्तीय मदद मिलेगी। जो किसान जैविक या जीरो बजट प्राकृतिक खेती कर रहे हैं, ये सहायता उनसे इतर है।

योग के प्रयोग दस साल में 12 लाख रुपए नशे में उड़ाए, नशा छूटा तो संपन्नता बढ़ी, यौगिक खेती से जिले में बनाई नई पहचान, कमा रहे अच्छा-खासा मुनाफा

करनाल के किसान ने नशा छोड़ अपनाई राजयोग की राह, यौगिक खेती से कमा रहे डबल मुनाफा

शिव आमंत्रण » करनाल (हरियाणा)

हरियाणा जिला करनाल ग्राम गगसीना के किसान ज्ञानसिंह संधू (54) की जिंदगी नशे की लत में उलझकर बोझ बन गई थी। मांस-शराब, जुआ-सट्टा, अफीस, बीड़ी-सिगरेट के नशे को ही जिंदगी का मकसद बना लिया था। हार्ट में ब्लॉकेज के साथ एक्जीमा, खासी-बलगम की बीमारी ने घेर लिया था। शरीर इतना कमजोर हो गया था कि दस कदम चलने में ही सांस फूलने लगी। लेकिन राजयोग मेडिटेशन के प्रयोग से नशा छूटने के साथ हार्ट के पांचों ब्लॉकेज सामान्य हो गए। एक्जीमा, खांसी-बलगम की समस्या भी दूर हो गई।

आज ज्ञानसिंह का जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। वहीं यौगिक खेती में जीरो बजट में अच्छा मुनाफा होने से कृषि वैज्ञानिक भी अचंभित हैं। अपने विचारों को बदलने से ज्ञानसिंह की पूरी जिंदगी खुशहाल और सुखमय बन गई। ज्ञानसिंह ने बताया कि मैं जब दस साल का था तभी से बीड़ी-सिगरेट की लत लग गई थी। जब बड़ा हुआ तो धीरे-धीरे अफीम का नशा करने लगा और जुआ भी खेलने लगा। वर्ष 1993 से तो नशे में ही रोजाना 200 रुपए खर्च होने लगे। वहीं वर्ष 2000 में स्थिति ये हो गई कि मांस-शराब, अफीम और जुआ में ही रोजाना 500 रुपए से अधिक खर्च होने लगे। पूरा परिवार इस नशे के चलते दुखों से घिर गया। सभी त्रस्त हो गए। लेकिन वर्ष 2004 में जब ब्रह्माकुमारी संगठन के संपर्क में आया तो पता चला कि ये जीवन कितना अनमोल है जिसे मैं बुराइयों में बर्बाद कर रहा हूं। यहीं से परिवर्तन की शुरुआत हुई। मात्र तीन माह के अंदर मैंने राजयोग मेडिटेशन का अपने जीवन में कई प्रयोग किए। इससे हार्ट के पांचों ब्लॉकेज खुल गए, वहीं नशे की लत छूट गई। आज मेरा जीवन खुशहाल हो गया है।

2008 से शुरू की यौगिक खेती: राजयोगी किसान ज्ञानसिंह ने बताया कि राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से अपने शरीर को स्वस्थ करने के बाद मैंने इसका प्रयोग खेती में करने की ठानी। पहले दो एकड़ गेहूं की फसल पर योग का प्रयोग किया। इसमें सिर्फ जैविक खाद ही डाला। पहले साल उत्पादन थोड़ा कम रहा और जो कमी रह गई उसे पूरी कर तीसरे साल फिर दो एकड़ जमीन पर गेहूं की सी-306 किस्म लगाई। इसमें सिर्फ जीवामृत व जैविक खाद डाला। ये जीरो बजट खेती रही। यौगिक खेती से एक एकड़ में 15 क्विंटल गेहूं निकला और रासायनिक खेती से 14 क्विंटल गेहूं निकला। रासायनिक खेती में पांच हजार रुपए का खर्च आया।

खेती को देते थे योग से शुभ संकल्प: ज्ञानसिंह ने बताया कि वह अपने खेत में सुबह 4 बजे और शाम को 6.30 बजे से 7.30 बजे तक राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से फसल को शुभ संकल्प देते थे। योग में ये अनुभव करते थे कि परमात्मा से शक्तिशाली किरणें आ रहीं हैं और वह खेत पर पड़ी रहीं हैं। इससे फसल की अच्छी वृद्धि हो रही है। वह दाना पौष्टिक हो रहा है। इस तरह योग का रोजाना प्रयोग किया। इस साल दो एकड़ में 34 क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ है। वहीं 35 क्विंटल बासमती चावल भी निकला है।

करनाल के किसान ज्ञानसिंह अपनी गेहूं की फसल को दुलारते हुए।

नशे में ऐसे बर्बाद किए रुपए...
वर्ष 1993 में नशे में 200 रुपए रोजाना खर्च
01 महीने में 6 हजार रुपए खर्च
01 साल में 72,000 रुपए खर्च
06 साल में 4,32,000 रुपए खर्च

चार साल में 7 लाख से अधिक किए खर्च
वर्ष 2000 से 500 रुपए रोजाना खर्च
01 महीने में 15 हजार रुपए खर्च
01 साल में 1,80,000 रुपए खर्च
04 साल में 7,20,000 रुपए खर्च

10 कदम चलने में ही फूलने लगी थी सांसें: पहले रात 1 बजे तक सोते थे और सुबह 11 बजे तक उठते थे। नशे के चलते शरीर इतना कमजोर और निढाल हो गया था कि मात्र दस कदम चलने में ही सांसें फूलने लगती थीं। एसीडिटी से जीना दुश्वार हो गया था। पैर में एक्जीमा भी हो गया था। दिन-रात खांसी चलती रहती थी और बलगम की समस्या भी हो गई थी। श्वास भी चलने लगी थी। डॉक्टर ने कहा था कि कुछ दिन और नशा नहीं छोड़ा तो जिंदगी से हाथ धोना पड़ सकता है। तीन महीने के राजयोग मेडिटेशन से ये सभी समस्याएं दूर हो गईं। अब तो दिनचर्या सुबह 4 बजे से ही शुरू हो जाती है। ज्ञानसिंह के जीवन में हुए परिवर्तन को देखकर पूरे गांव के लोग एक बार माउंट आबू पहुंचे और बोले ये परिवर्तन सिर्फ परमात्म शक्ति से ही संभव है। नशा छोड़ने के बाद पैसे का जहां दुरुपयोग बच गया, वहीं आर्थिक संपन्नता भी बढ़ गई। 10 नवंबर 2011 को मैंने गेहूं अनुसंधान निदेशालय करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में दो एकड़ जमीन में विधिपूर्वक यौगिक खेती के तहत फसल बुआई की। जब फसल पकी और अनाज उत्पादन का जो प्रतिशत आया वह चौंकाने वाला था।

चार प्लॉटों में बांटा था खेत को

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में किसान ज्ञान सिंह ने दो एकड़ खेत को चार भागों में बांटा। जिसके बराबर चार हिस्से किए। एक भाग में यौगिक और जैविक खेती की। दूसरे हिस्से में सिर्फ जैविक खेती, तीसरे में बिना खाद के फसल उत्पादन और चौथे हिस्से में रासायनिक खेती। सभी हिस्सों में बराबर अन्न की बुआई की लेकिन जो परिणाम आए वह सभी के अलग-अलग थे।

गेहूं की फसल में किया गया परीक्षण

पद्धति	पौधा की लंबाई (सेमी में)	चौड़ाई	उपज क्विंटल /हेक्टेयर	1000 दानों में प्रोटीन की मात्रा
यौगिक+जैविक	112.35	7.9	20.55	9.28
जैविक	100.90	7.6	16.63	8.95
रासायनिक	155.55	8.4	19.50	9.23

यौगिक+जैविक खेती में पाया गया सबसे अधिक प्रोटीन।

बासमती चावल फसल वर्ष 2012-13

पद्धति	पौधा की लंबाई (सेमी में)	चौड़ाई	1000 दानों का वजन(ग्रा.)	उपज किं./प्रति हेक्टे.
यौगिक+जैविक	143.2	24.6	23.8	43.61
जैविक	145.8	26.8	23.94	33.79
रासायनिक	135.0	25.7	23.34	41.21

यौगिक+जैविक खेती में उत्पादन क्विंटल/हेक्टेयर सबसे ज्यादा रहा।

विचारों का वनस्पतियों पर पड़ता है प्रभाव

विचारों का प्राणियों के साथ वनस्पति पर भी प्रभाव पड़ता है। वनस्पतियों में भी संवेदनाएं होती है। उन्हें भी अच्छा संगीत सुनने और शुभ संकल्पों से सकारात्मक प्रभाव महसूस होता है। वनस्पति वैज्ञानिक डॉ. जगदीशचंद्र बोस ने अपने प्रयोग में यह सिद्ध कर दिखाया है कि वनस्पति भी हमारी संवेदनाओं व विचारों से प्रभावित होती है। दुनिया में जिस तरह से रासायनिक खेती का चलन बढ़ रहा है यदि हालात यही रहे तो वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक मनुष्य कैंसर, अल्सर, एसीडिटी, डायबिटीज, दिल की बीमारी जैसे गंभीर रोगों से ग्रसित होंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए आज कई देशों में किसान तेजी से जैविक खेती की ओर आकर्षित हो रहे है। लेकिन इसमें पैदावार रासायनिक की तुलना में कम आती है जो कि किसानों को आर्थिक रूप प्रभावित करती है। वहीं हम जैविक के साथ यौगिक खेती करते है तो फसल का उत्पादन भी रासायनिक खेती के समतुल्य होता है। इसमें लागत भी कम आती है। यौगिक-जैविक खेती से उत्पादित अन्न का सेवन हमारे शरीर व मन को शांत रखने में सहायक सिद्ध होता है। कहा भी गया है जैसा अन्न, वैसा मन। कई किसानों ने जैविक-यौगिक खेती के प्रयोग किए और परिणाम बहुत ही सकारात्मक प्राप्त हुए। इसी को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग ने वैज्ञानिक रूप से तथ्य जुटाने के लिए कृषि विश्वविद्यालय, दंतेवाड़ा गुजरात में वैज्ञानिक प्रयोग किए गए। जिसके काफी सकारात्मक परिणाम मिले। गेहूं-धान प्रणाली पर मैंने कई किसानों को जैविक-यौगिक खेती पद्धति से फसल उत्पादन अपने मार्गदर्शन में कराया, जिसके परिणाम सकारात्मक आए।

डॉ. सुभाष गिल
प्रधान वैज्ञानिक, गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल, हरियाणा

फसलों पर राजयोग मेडिटेशन के प्रभाव से, डेढ़ गुना बढ़ गया उत्पादन

यौगिक खेती से लहलहा रही करेला की फसल।

मप्र देवास जिले के ग्राम पुंजापुरा के किसान ने किया कमाल, योग के प्रयोग से लहलहाई करेला-गिलकी की फसल, कम लागत में कमा रहे ज्यादा मुनाफा

शिव आमंत्रण » पुंजापुरा (देवास, मप्र)

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इंसानों की तरह पेड़-पौधे भी हमारी भावनाओं और संवेदनाओं को महसूस करते हैं। वह भी तनाव और खुशी महसूस करते हैं। यदि परिवार के सदस्यों की तरह उन्हें भी प्यार-दुलार करें और सकारात्मक चिंतन के साथ शुभ वायब्रेशन दें तो वह भी खुशी से झूम उठेंगे।

मध्यप्रदेश के देवास जिले के ग्राम पुंजापुरा के किसान नरेन्द्र हम्मड़ खेती में नए-नए प्रयोग के लिए पूरे जिले में प्रसिद्ध हैं। हाईटेक खेती करने पर उन्हें वर्ष 2016 में उन्नतशील किसान का जिलास्तरीय अवार्ड भी मिल चुका है। बचपन से ही आध्यात्मिकता की ओर रुझान होने और राजयोग मेडिटेशन के दौरान एक दिन उन्हें ख्याल आया कि जब राजयोग मेडिटेशन से हमारे विचार बदल सकते हैं, इंसान के स्वभाव-संस्कार सकारात्मक हो सकते हैं तो इसका प्रयोग फसलों पर भी किया जाए। नरेन्द्र ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू द्वारा चलाए जा रहे जैविक-यौगिक खेती प्रोजेक्ट के तहत प्रशिक्षण लेकर वर्ष 2015 में अपनी जमीन पर जैविक-यौगिक खेती की शुरुआत की। पहले साल अच्छे परिणाम मिलने पर वह खुशी से झूम उठे। उन्होंने साल पांच एकड़ जमीन पर गेहूं, चना और सब्जी पर जैविक-यौगिक खेती के तहत प्रयोग किए। जब फसल आई तो रासायनिक फसल से उत्पादन डेढ़ गुना अधिक रहा।

एक एकड़ में निकला 14 क्विंटल गेहूं: नरेन्द्र ने बताया गेहूं-चने की बोवनी करने के पहले बीज को ध्यान कक्ष में रखकर पहले योग के माध्यम से चार्ज किया। बाद में रोज खेत में बने ध्यान कक्ष में बैठकर सुबह 9 बजे से 11 बजे तक और शाम को 6.30 बजे से 7.30 बजे तक योग के माध्यम से फसल को शुभ संकल्प दिए।

फसलों से की बच्चों की तरह बात...

नरेन्द्र के मुताबिक मैं रोज फसलों से बच्चों की तरह प्यार-दुलार करते हुए उनसे बातें करता था। उनसे दुःख-दर्द सांझा करता और उन्हें बहुत ही स्नेह करता हुए दुलारता था। साथ ही रोज मेडिटेशन में के माध्यम से शुभ वायब्रेशन देता था कि मेरी फसल सबसे अच्छी है। सभी फसलें स्वस्थ और तेजी से बढ़ रही हैं। फसलों में स्वादिष्ट दाना लग रहा है। ये तो मेरे बच्चों जैसी है और मैं इन्हें सबसे ज्यादा प्रेम करता हूं। पहले खेती में बहुत रासायनिक खाद और पेस्टीसाइड का उपयोग करते थे लेकिन मन में अजीब का दर्द होता था कि हम अपने ही हाथों से अपनी फसलों को जहर बना रहे हैं। इसके चलते आर्गेनिक विधि अपनाई और नीम की पत्तियों का अर्क तैयार किया। इसे फसल पर छिड़काव किया तो सारे कीट उसकी दुर्गंध से ही भाग

योग के माध्यम से गिलकी की फसल को शुभ वायब्रेशन देते किसान नरेन्द्र हम्मड़ व ब्रह्माकुमारी बहनें।
इनसेटः योग के प्रयोग के गिलकी का जहां ज्यादा उत्पादन हुआ वहीं ये खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक भी थी।

खेतीहर मजदूरों का भी व्यसन छुड़वाया...

नरेन्द्र का मानना है कि खेती में काम करने वाले एक-एक व्यक्ति की अच्छी-बुरी भावनाओं फसलों पर प्रभाव पड़ता है। इसके चलते जो मजदूर काम के दौरान गुटखा खाते थे या अन्य व्यसन करते थे उनका व्यसन भी छुड़वाया। इसके लिए उन्हें ज्यादा पैसा दिया। इससे मजदूरों में भी सकारात्मक बढ़ी और अब तो प्रेम-प्यार और शांति से ही सारा काम हो जाता है।

सरकार ने हाईटेक किसान होने से विदेश भेजा...

खेती में नए-नए प्रयोग करने और हाईटेक किसान होने से सरकार ने नरेन्द्र का चयन कर वर्ष 2016 में विदेश यात्रा पर भेजा। इस दल में भारत से 400 किसान शामिल रहे। इस दौरान उन्होंने इजराइल और जार्डन में खेती की नई-नई पद्धति को जाना। इजराइल खेती के मामले में बहुत हाईटेक देश है। वहां बारिश कम होती है ऐसे में एक-एक बूंद का सदुपयोग कैसे करें ये सबक हम इजराइल से ले सकते हैं।

वर्ष 2014 में निकला 15 किलो का तरबूज

किसान नरेन्द्र ने वर्ष 2014 में अपनी पांच एकड़ जमीन पर तरबूज की फसल लगाई। इसमें सिर्फ जैविक खाद का ही उपयोग किया। साथ ही योग का प्रयोग भी किया। इससे फर्टिलाइजर और पेस्टीसाइड में जो पैसा खर्च करते थे वह बच गया। प्रतिदिन राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से फसल को शुभ प्रकपन देते थे। मन की भावनाओं को पेड़-पौधे कैच करने लगे। इससे फसल में तेजी से ग्रोथ हुई और जब उसमें फल लगा तो वह स्वादिष्ट और चमकदार था। कंपनी ने जो बीज दिया था तो उसका अधिकतम 4 किलो तक का फल लगना बताया था लेकिन मेरे यहां अधिकतम 15 किलो तक का तरबूज निकला। यह देख आसपास के किसानों को भी आश्चर्य हुआ।

तीन दिन बीज संस्कार जरूरी

जमीन में बोने वाले बीज को मेडीटेशन कक्ष में रखकर पहले तीन दिन या सात दिन तक ब्रह्ममुहूर्त के समय प्रातः 4 बजे आधा घंटा योग अभ्यास द्वारा अपनी सकारात्मक ऊर्जा एवं परमात्म शक्तियों से उस बीज को चार्ज करते हैं, जिसे हम बीज संस्कार कहते है। फिर परमात्मा की याद में बीज बोते हैं और खेत में परमात्मा शिव का ध्वज फहराते हैं ताकि वहां आने जाने वालों को परमात्मा पिता की याद आती रहे और उनकी सकाश पूरी फसल पर फैलती रहे।

शाश्वत यौगिक खेती क्यों जरूरी हैं?

आज रासायनिक खाद, फर्टिलाइजर, पेस्टीसाइड, कीटनाशकों के उपयोग से फसल की पैदावार तो बढ़ी है वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हम जो अनाज, दाल, सब्जी, फल आदि खा रहे है उसमें से पौष्टिकता गायब हो चुकी है। स्वादिस्ट पौष्टिक, शुद्ध, सात्विकता के अभाव में मनुष्य का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। सम्पूर्ण तन-मन के स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक तथा संतुलित भोजन का होना जरूरी है। आदिकाल में मनुष्य निरोगी काया, दीर्घायु प्राप्त करते थे। अतः हमें पौष्टिक एवं सात्विक अन्न प्राप्त हो सके इसके लिए जैविक और यौगिक खेती एक कारगर कदम सिद्ध होगी। क्योंकि जब हम श्रेष्ठ व सकारात्मक वायब्रेशन से उत्पन्न अन्न ग्रहण करेंगे तो हमारे विचार भी श्रेष्ठ और सकारात्मक होंगे।

वनस्पति पर भी पड़ता हैं भावनाओं का प्रभाव

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने अपने प्रयोग से किया सिद्ध

जगदीशचंद्र बोस
प्रसिद्ध भौतिकविद् व पादप क्रिया वैज्ञानिक, भारत

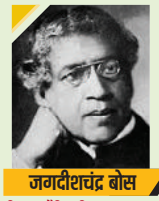

मनुष्यात्मा जो भी विचार या भावना उत्पन्न करती है उसका सीधा प्रभाव पेड़-पौधों और वातावरण पर पड़ता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि मनुष्यों जैसे ही पेड़-पौधे भी हमारी संवेदनाओं को महसूस करते हैं। उन्होंने वनस्पति के अंदर के हलचल को रिकार्ड करने की एक मशीन तैयार की जिसके आधार से उन्होंने यह सिद्ध करके दिखाया है कि कैसे मन की भावनाओं का वनस्पतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारे मन में विचार करने की शक्ति होती है। हर विचार में विशेष ऊर्जा होती है। सकारात्मक विचारों में सकारात्मक ऊर्जा तथा नकारात्मक विचारों में नकारात्मक ऊर्जा होती है। जिस प्रकार किसी शांत सरोवर के जल में एक पत्थर फेंकते हैं तो जिस स्थान पर पत्थर गिरता है तो उस स्थान से जल तरंगे उठती हुई एक वृत्त के आकार में समग्र सरोवर में फैलती जाती है। ऐसे ही जब हमारा मन कोई विचार उत्पन्न करता है तो उसके विचारों से निकली हुई तरंगे अथवा वायब्रेशन एक वृत्त के आकार में मन के चारों ओर फैलते जाती है, जो पर्यावरण और फसल को प्रभावित करती है। जहां सकारात्मक विचारों से सकारात्मक वायुमंडल बनता है, वहीं नकारात्मक विचारों से नकारात्मक वायुमंडल बनता है। सकारात्मक विचारों का शक्तिहीन धरती और फसल पर एक जादू जैसा चमत्कारिक असर होता है।

एक नजर में...

- गेहूं की फसल दो एकड़ में लगाई। एक एकड़ में 14 क्विंटल उपज निकली। कुल 28 क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ।
- चना की फसल भी दो एकड़ में लगाई एक एकड़ में 7 क्विंटल उपज निकली। कुल 14 क्विंटल चने का उत्पादन हुआ। सबसे बड़ी बात चने का दाना चमकदार साइज में भी बड़ा रहा।
- एक एकड़ में चार प्रकार की सेजी- लौकी, करेला, गिल्की और भिंडी लगाई। इसमें भी सिर्फ जैविक खाद का प्रयोग किया और योग से शुभ वायब्रेशन दिए। सभी सेंजियां जहां स्वादिष्ट निकलीं, वहीं साइज भी रासायनिक तरीके से उगाई गई सेजी से बड़ी रही।

यौगिक खेती का आधार 'राजयोग'

वर्तमान समय जिस दौर से दुनिया गुजर रही है और अनेक समस्याएं हमारे सामने खड़ी हैं इन सभी समस्याओं और परेशानियों का हल राजयोग में समाया हुआ है। शुभभावना और शुभकामना में इतनी शक्ति है जो संसार के हर असंभव कार्य को संभव कर देती है। क्या आप भी दुःख, चिंता, डर, भय, तनाव, निराशा में जी रहे है तो आपका ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र पर स्वागत है।

खेत में राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से गोभी की फसल को योग के प्रकंपन देतीं ब्रह्माकुमारी बहनें।

शिव आमंत्रण » मेहसाना (गुजरात)

भारत देश गांवों का देश है। गांवों के विकास में ही भारत का विकास समाया हुआ है। हमारे देश की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में ही निवास करती है। यदि हमें भारत को सुखी-समृद्ध बनाना है तो गांवों को सुखी और समृद्ध बनाना होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना सन् 1996 में की गई। इसका मुख्य कार्यालय पीस पैलेस, मेहसाना, गुजरात में है।

ग्राम विकास प्रभाग ने रासायनिक खादों से उत्पन्न फसल के दुष्परिणामों को लेकर एक गहन अध्ययन किया और अपने शोध में पाया कि इससे उत्पन्न फल, सब्जी, अनाज को खाने से मानव शरीर में अनेक विकृतियां पैदा हो रही है। इसका हल निकालते हुए प्रभाग में वर्षों तक कठिन परिश्रम कर खेती की एक नई पद्धति का विकास किया। जिसे नाम दिया 'शाश्वत यौगिक खेती'। इसका उद्देश्य था कम लागत में अच्छी पैदावार और किसान भाईयों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना।

प्रभाग के भाई-बहनों ने जैविक खाद का उपयोग करते हुए राजयोग (मेडिटेशन) का प्रयोग फसल पर किया। इसके परिणाम आश्चर्यजनक थे लैब में जब इस फसल को परीक्षण के लिए भेजा गया तो पाया कि राजयोग के प्रयोग से उत्पन्न फसल में पौष्टिकता की मात्रा बढ़ गई और दाना ज्यादा चमकदार और बड़ा हुआ।

कम खर्च में अधिक उत्पादनः शाश्वत यौगिक खेती कम खर्च में अधिक तथा गुणवत्ता युक्त उत्पादन की पद्धति है। यदि किसान यौगिक खेती पद्धति अपनाए तो योग द्वारा अविनाशी प्रकाशमय परमात्मा के पवित्र प्रकम्पन से फसलों की उत्पादन क्षमता तथा गुणवत्ता अवश्य ही बढ़ेगी। कम से कम खर्च में और सहजता से सात्विक और ताकतवर अन्न का निर्माण कर किसान अपने मन, वाणी, कर्म को सम्पूर्ण पवित्र तथा शक्तिशाली बना सकता है। योगबल से प्रकृति के पांचों तत्वों को सकाश देने से मानवीय जीवन पवित्र सुख-शांति से भरपूर बन जाएगा और वह आनन्द का अनुभव करेगा। यौगिक खेती की सफलता का आधार सहज राजयोग है। योग शक्ति से फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है। जिस प्रकार राजयोग से मानव को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति होती है तो उसी प्रकार सामुहिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन में राजयोग का नियमित अभ्यास करने से सात्विक अन्न का उत्पादन होता है। जो हमारे मन को शांत और बुद्धि को विवेक युक्त बनाता है। इसके साथ ही हमें संपूर्ण स्वास्थ्य भी प्राप्त होता है।

पांचों तत्वों पर पड़ता है योग का प्रभाव

राजयोगी किसान भाई–बहनों का अनुभव है कि ईश्वरीय वरदान और सहज राजयोग के अेयास से ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होती है। इससे अलौकिक जीवन में भरपूरता एवं संतुष्टता की अनुभूति होती है। जिस प्रकार योगी पुरुष का प्रभाव अन्य आत्माओं पर पड़ता है उसी प्रकार वनस्पति पर भी पड़ता है। योग की शक्तियों का नियमित प्रयोग करने से इसका प्रभाव फसल के साथ प्रकृति के पांचों तत्वों पर भी पड़ता है। जिससे सभी प्रकार की वनस्पति फसल या वृक्ष, सूक्ष्म जीव–जंतु एवं पर्यावरण में रहने वाले पशु–पक्षी भी परमात्म शक्ति से भरपूर चैतन्यमय, ऊर्जात्मक बनते हैं। ऐसे प्रकेपनों से फसल में बीज और फल अच्छा बनता है। जिससे उत्पादित अनाज गुणवेा से भरपूर होता है। यही यौगिक खेती की सफलता का प्रमाण है।

बीटेक के बाद अपनाई यौगिक खेती की राह

हरियाणा के जयवीर आर्य युवाओं के लिए बने मिसाल

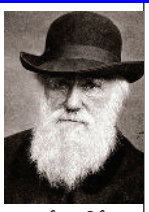

रानीला (हरियाणा). आज जहां ऊंची पढ़ाई पढ़ने के बाद युवा मोटी सैलरी के लिए अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों की ओर रूख करते हैं। वहीं रानीला हरियाणा के जयवीर आर्य उन युवाओं में से है जिन्होंने बीटेक की पढ़ाई पूर्ण कर पैतृक व्यवसाय को अपनाया और खेती करने का निश्चय किया।

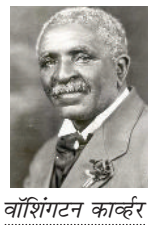

जयवीर बताते है मेरे पिताजी पहले रासायनिक खेती करते थे। जिसमें वे खाद और कीटनाशकों का इस्तेमाल करते थे। जिसके लिए उन्होंने बैंक से काफी लोन भी लिया था और बाहर का भी बहुत कर्ज लिया। जिससे वे हमेशा चिंतित रहते। फसल से इतनी आमदनी नहीं होती थी कि वे सभी का कर्जा चुका पाते। इसी दौरान मैं ब्रह्माकुमारी । के ग्राम विकास प्रभाग के सम्पर्क में आया। जहां मुझे शाश्वत् यौगिक जैविक खेती करने की प्रेरणा मिली। मैंने वापस आकर अपने खेत पर इसका प्रयोग किया और रासायनिक खाद की जगह मैंने जैविक खाद का प्रयोग किया और अपनी फसल को मैं योग के द्वारा सकारात्मक संकल्प देता था। इसका परिणाम मुझे जल्द ही मिल गया। मुझे पहले की जगह ज्यादा उत्पादन प्राप्त हुआ और फसल का भी उचित मूल्य मिल गया। हमारे खेत में उत्पादित सब्जियों की मांग बाजार में सदा रहती थी।

... और चुका लिया कर्जा

जयवीर आर्य

इस तरह हमने बैंक और अन्य लोगों का भी कर्जा जल्द ही चुका दिया। सचमुच में यह खेती बहुत ही कमाल की है जो कम खर्च में ज्यादा उत्पादन देती है। इसलिए हम सभी किसानों को आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए यह खेती जरूर करनी चाहिए।

यौगिक खेती से ही आएगी उर्वरा शक्ति

डॉ. आरएन पदारिया
मुख्य वैज्ञानिक,
आईएआरई, दिल्ली

अध्यात्म मन के अंधकार को मिटाकर जीवन को रोशन करता है। विज्ञान और अध्यात्म का गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। आज शारीरिक रूप से उत्पन्न सभी समस्याओं का मूल कारण हमारा खानपान ही है। क्योंकि हम जो भी खा रहे है चाहे वह अनाज, फल, सब्जी सब रासायनिक खाद और फर्टिलाइजर से तैयार किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप कैंसर, डायबिटीज, एसीडिटी जैसी भयानक बीमारियां हो रही है। फसल में पोषक तत्वों की कमी से शरीर में भी पोषक तत्वों की कमी हो गई है। यौगिक खेती को सिर्फ एक उत्पादन का जरिया न समझे उसको पूरा जीविका का जरिया समझें। जमीन की उर्वरा शक्ति को हम यौगिक खेती द्वारा ही वापस ला सकते हैं। स्वच्छ यौगिक खेती पद्धति से खेती करने पर कम लागत में रासायनिक खाद से की गई खेती के समतुल्य उत्पादन होता है। यौगिक खेती हमारी प्राचीन खेती पद्धति है। आज मनुष्य विकृति आने के पीछे खाद्य-पदार्थ का भी बहुत योगदान है। अगर हम अच्छा खायेंगे, अच्छा सोचेंगे तो मन पर भी अच्छा प्रभाव होगा।

खुशखबरीः यदि आप भी राजयोग मेडिटेशन सीखना चाहते हैं और शाश्वत यौगिक–जैविक खेती के बारे में अधिक जानकारी चाहते हैं तो ब्रह्माकुमारीज़ के नजदीकी सेवाकेंद्र पर संपर्क कर सकते हैं–

ब्रह्माकुमारीज़ः खंडवा के स्थानीय सेवाकेंद्र-

KHANDWA

B.K. Shakti,
Brahma Kumaris,
'Bhagyodaya Bhawan',
Anand Nagar, Main Road,
Dist: Khandwa,
Khandwa - 450001(MP)
T 0733-2249207
Email- khandwa@bkivv.org

HARSUD

B.K. Santosh
Brahma Kumaris,
Rajyoga Meditation
Centre, Opp. Green Fild
School, Sector no. 05,
House No. B1, New
Harsud (Chanera) Dist:
Khandwa - 450116 (MP)
Mo. 9425928507

OMKARESHWAR

B.K. Shyama,
Brahma Kumaris,
Rajyoga Anubhuti Kendra,
Gram Kothi,
Omkareshwar Mandhata,
Dist: Khandwa,
Omkareshwar- 450554 (MP)
omkareshwar@bkivv.org

PANDHANA

B.K. Surekha,
Brahma Kumaris,
'Shiv Aashish Bhawan',
KVMC collage, Sai colony,
Pandhana, Dist: Khandwa,
Khandwa - 450661(MP)
Mo. 9424570905
pandhana@ bkivv.org

वैज्ञानिकों ने भी माना वनस्पति में होती हैं संवेदनाएं

... कोई शक्ति होती है

चार्ल्स डार्विन

चार्ल्स डार्विन नामक वैज्ञानिक ने अपने प्रयोग में यह स्पष्ट किया कि वनस्पतियों में कोई शक्ति होती है जिस द्वारा वनस्पतियों को समझ व बुद्धि प्राप्त होती है। उन्होंने अपने दि पॉवर ऑफ मूवमेंट इन प्लांटस किताब में लिखा है कि वनस्पतियों के जड़ों के रेशों पर जो जीवाणु होते हैं वह ब्रेन के समान कार्य करते हैं। ये कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ये पेशियां वनस्पतियों के लिए ब्रेन का काम करती है, जो संदेश को ग्रहण करती है और हलचल को नियंत्रण करती है।

प्रकृति से प्रेम जरूरी

वॉशिंगटन कार्व्हर

अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जार्ज वॉशिंगटन कार्व्हर के खेती संबंधित विभिन्न प्रयोगों को देखकर कई लोगों ने उनसे पूछा कि क्या आपके जैसे प्रयोग व अनुभव और कोई कर सकता है? तो उन्होंने अपना हाथ टेबल पर रखी हुई बाइबिल पर रखकर जवाब दिया कि सब रहस्य इसमें छिपे हुए हैं, परमात्मा के आश्वासनों में। केवल यह आश्वासन ही सत्य है, इसमें असीमित ताकत है, जिन्हों का विश्वास है वह सभी मेरे जैसे अनुभूति व प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए प्रकृति तथा वृक्ष वनस्पतियों से प्रेम करना होगा।

पत्र व्यवहार का पता

संपादक » ब्र.कु. कोमल,
ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो » 9413384884, 9179018078, 9414172596,
Email » shivamantran@bkivv.org

प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित • सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित • संपादकः ब्र.कु. कोमल • संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र • RNI No.: RJHIN/2013/53539